

हिंदी विभाग
विश्वभारती, शान्तिनिकेतन
पश्चिम बंगाल - 731235

नई शिक्षा नीति-2020 के अनुसार
दो वर्षीय स्नातकोत्तर हिंदी पाठ्यक्रम
कोर्स कोड: MA 124



पाठ्यक्रम विवरणिका
(शैक्षणिक सत्र : जुलाई, 2026 से आरंभ)

प्रस्तावना: हिंदी में मास्टर ऑफ आर्ट्स (एम.ए.) एक व्यापक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध स्नातकोत्तर कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य छात्रों की हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति की समझ को गहराई प्रदान करना तथा उन्हें गहन अध्ययन और अनुसंधान के लिए प्रेरित करना है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ऐसे विवेकशील, संवेदनशील और आलोचनात्मक दृष्टिकोण से युक्त व्यक्तित्व की आवश्यकता है, जो समाज में व्याप्त नकारात्मक प्रवृत्तियों के विरुद्ध समानता, न्याय और बंधुत्व की भावना को सशक्त बना सके। साहित्य का अध्ययन न केवल मानवीय चेतना का विस्तार करता है, बल्कि उसमें निहित मूल्यों के माध्यम से मानवीयता और नैतिकता की दृढ़ स्थापना भी करता है। इस पाठ्यक्रम में भाषा, आलोचना और सिद्धांतों का अध्ययन जहाँ छात्रों को विचारधारात्मक गहराई प्रदान करता है, वहीं कविता, कहानी, नाटक और निबंध जैसे रचनात्मक विधाओं का अध्ययन उनकी व्यावहारिक समझ और अभिव्यक्ति क्षमता को सशक्त बनाता है। एम.ए. हिंदी का यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही स्तरों पर सक्षम बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित वैकल्पिक विषयों की व्यवस्था छात्रों को अपनी रुचियों और अनुसंधान की प्रवृत्तियों के अनुसार विषय चयन की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

उद्देश्य(Objectives) इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य स्नातक स्तर के पश्चात विद्यार्थियों को हिंदी विषय के गहन अध्ययन के लिए प्रेरित करना है। पाठ्यक्रम कुल चार सेमेस्टरों में विभाजित है। चौथे सेमेस्टर में विद्यार्थियों को वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के चयन की सुविधा प्रदान की गयी है, जिनमें कुछ पाठ्यक्रम अंतःविषय (interdisciplinary) दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। साथ ही, प्रोजेक्ट कार्य को सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य किया गया है, जो शोध की प्रारंभिक समझ विकसित करने और आगे की शैक्षणिक यात्रा का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक हो सकता है। पाठ्यक्रम का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य भाषा और समाज के परस्पर जटिल संबंधों की पहचान करना है, जिससे विद्यार्थी देश, समाज और विश्व के व्यापक सरोकारों से जुड़ सकें। इसके माध्यम से उनके भाषा-कौशल, लेखन क्षमता और संप्रेषण दक्षता का भी सर्वांगीण विकास संभव हो सकता है। पाठ्यक्रम में भाषा विज्ञान, हिंदी साहित्य, भारतीय ज्ञान परम्परा, भारतीय साहित्य तथा प्रयोजनमूलक भाषा विज्ञान जैसे विषयों का समावेश किया गया है, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करते हुए उन्हें समग्र दृष्टि से सक्षम बनाने में सहायक होंगे।

परिणाम(Outcomes) इस पाठ के अध्ययन एवं शिक्षण के परिणामस्वरूप निम्न प्रमुख बिंदु सामने आते हैं:

1. हिंदी भाषा की मूलभूत समझ- इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को हिंदी भाषा की प्रकृति, ध्वन्यात्मकता तथा संरचना के वैज्ञानिक पक्षों की सुस्पष्ट जानकारी प्राप्त होगी।
2. भाषा की व्यावहारिक दक्षता- भाषा के व्यावहारिक पक्ष का ज्ञान प्राप्त कर छात्र प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित कर सकेंगे।
3. शोध एवं अध्ययन की दिशा में उन्मुखता- उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी की भूमिका को समझते हुए छात्र इसे शोध और अध्ययन के प्रभावी माध्यम के रूप में ग्रहण कर सकेंगे।
4. सांस्कृतिक बोध और व्यक्तित्व विकास- हिंदी के साथ-साथ भारतीय साहित्य का अध्ययन छात्रों में सांस्कृतिक जागरूकता और व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।
5. मूल्य-बोध का विकास- साहित्य के अध्ययन से नैतिकता, सामाजिक समरसता, न्याय एवं संवेदनशीलता जैसे मानवीय मूल्यों की समझ विकसित होगी।

6. आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास- साहित्यिक विषयवस्तु पर सहमति-असहमति की विवेकशील दृष्टि विकसित होगी, जिससे वैचारिक स्पष्टता आएगी।
7. ऐतिहासिक और समकालीन साहित्य का मूल्यांकन- साहित्य को प्राचीन से समकालीन संदर्भों में समझने की क्षमता विकसित होगी, जिससे युगबोध और साहित्य के महत्व का विश्लेषण संभव होगा।
8. तुलनात्मक अध्ययन और शोध क्षमता- भारतीय एवं पश्चिमी साहित्य-संस्कृति के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से छात्रों में विश्लेषणात्मक और शोधपरक दृष्टिकोण का विकास होगा।
9. सौंदर्यशास्त्रीय ज्ञान- प्राचीन और आधुनिक भारतीय तथा पश्चिमी काव्यशास्त्र व सौंदर्य सिद्धांतों के गहन अध्ययन से विश्लेषणात्मक क्षमता में वृद्धि होगी।
10. भाषिक दक्षता और नवाचार- छात्र हिंदी भाषा में नवाचार के साथ व्यवहारिक दक्षता और भाषिक निपुणता प्राप्त करेंगे।

शिक्षण-प्रशिक्षण विधियाँ: इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा-व्याख्यान, समूह-चर्चा, विषय-आधारित सेमिनार, वाद-विवाद, लिखित परीक्षाएँ तथा अन्य शिक्षण-अभ्यासात्मक गतिविधियाँ सम्मिलित की जाएंगी, जिससे अध्ययन अनुभव अधिक प्रभावशाली और समृद्ध बन सके।

पाठ्यक्रम विवरणिका: यह पाठ्यक्रम वर्ष 2026 के प्रथम सेमेस्टर से लागू किया जाएगा। पाठ्यक्रम की संरचना, प्रश्नपत्रों के प्रारूप तथा अंक-विभाजन में आवश्यक एवं उपयुक्त संशोधन किए गए हैं। इसके साथ ही, प्रस्तावित पुस्तकों की सूची को भी अद्यतन किया गया है। एम.ए. हिंदी का यह पाठ्यक्रम एक दो वर्षीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम है, जिसे दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक भाग में दो-दो सेमेस्टर होंगे।

परीक्षा संरचना एवं अंक-विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

मुख्य परीक्षा : 80 अंक

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	(03×16)	: 48 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	(03×08)	: 24 अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	(01×08)	: 08 अंक

मुख्य परीक्षा की अवधि : 03 घंटे

विवरणिका

क्र. सं.	वर्ष	सत्र	पत्र	पत्र का नाम	क्रेडिट	पृष्ठ संख्या
1	प्रथम	प्रथम	HIN 401	हिंदी साहित्य का इतिहास	4	
2			HIN 402	भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक कवि	4	
3			HIN 403	भाषा विज्ञान, हिंदी भाषा एवं प्रयोजनमूलक हिंदी	4	
4			HIN 404	नाटक एवं निबंध	4	
5			HIN 405	भारतीय साहित्य का तुलनात्मक परिदृश्य	4	
6		द्वितीय	HIN 406	आधुनिक हिंदी कविता	4	
7			HIN 501	हिंदी कथा साहित्य	4	
8			HIN 502	काव्यशास्त्र	4	
9			HIN 503	हिंदी आलोचना एवं सैद्धांतिक मत	4	
10			HIN 504	हिंदी का कथेतर गद्य	4	
11	द्वितीय	तृतीय	HIN 505	अनुसंधान तकनीक (रिसर्च मेथालोजी एंड टेकनीक)	4	
12			HIN 506	शोध प्रस्ताव लेखन	4	
13			HIN 507	प्रबंध लेखन (रिपोर्ट राइटिंग)	4	
14			HIN 508	पुस्तक समीक्षा (बुक रिव्यू)	4	
15			HIN 509	शोध नैतिकता (पब्लिकेशन इथिक्स) एंड हिंदी कंप्यूटिंग	4	
16		चतुर्थ	HINRES 510	अनुसंधान	20	

सत्र : 1

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 1

पत्र कोड : HIN 401

हिंदी साहित्य का इतिहास

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: हिंदी साहित्य के विकासक्रम और उसमें आए विभिन्न परिवर्तनों के साथ साहित्य इतिहास लेखन की आवश्यकता और उपयोगिता का ज्ञान होगा; जिससे उनकी साहित्य इतिहास सम्बन्धी ज्ञान में समृद्धि होगी जिसका उपयोग वे विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों एवं परीक्षाओं में कर सकेंगे।

पाठ्यविषय :

इकाई – I

1. साहित्य इतिहास लेखन की परंपरा, इतिहास दर्शन की पद्धतियाँ एवं सिद्धांत, साहित्येतिहास लेखन की प्रवृत्तियाँ साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ
2. आदिकाल: पृष्ठभूमि, नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, सिद्ध, नाथ, जैन, रासो तथा लौकिक साहित्य सम्बन्धी प्रतिनिधि रचनाकार

इकाई – II

1. भक्तिकाल: भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप, उद्भव की पृष्ठभूमि, विभिन्न मत, प्रमुख संप्रदाय, निर्गुण भक्तिधारा: संत एवं सूफी काव्य, सगुण भक्तिधारा: रामकाव्य एवं कृष्णकाव्य, प्रवृत्तियाँ एवं विचारधारा
2. रीतिकाल: पृष्ठभूमि, रीतिसिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त काव्य, प्रवृत्तियाँ एवं विचारधारा

इकाई – III

1. आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, पुनर्जागरण, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ
2. छायावादी एवं उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ- प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, अकविता, नवगीत, समकालीन कविता, प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ

इकाई – IV

1. हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाएँ, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत, डायरी, रिपोर्टाज, आलोचना आदि की संक्षिप्त विकास यात्रा

संदर्भ ग्रंथ : -

1. हिंदी साहित्य का इतिहास- रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
2. हिंदी साहित्य की भूमिका- हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास- हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली
4. हिंदी साहित्य का आदिकाल- हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
5. हिंदी साहित्य का अतीत (भाग-1 एवं 2), विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी, दिल्ली

6. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद
7. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
8. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण, दिल्ली
9. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, रामकुमार वर्मा, लोकभारती, इलाहाबाद
10. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती, इलाहाबाद
11. साहित्य इतिहास दर्शन और हिंदी साहित्य के ऐतिहासिक प्रक्रिया, हरिश्चंद्र मिश्र, श्यामा प्रकाशन, प्रयागराज
12. साहित्य की इतिहासदृष्टि, मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

सत्र : 1

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 2

पत्र कोड : HIN 402

भारतीय ज्ञान परम्परा के आरंभिक संवाहक कवि

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक आरम्भिक हिंदी कवियों एवं उनकी रचनाओं का विशिष्ट ज्ञान होगा, जिससे आरम्भिक हिंदी कवियों एवं उनकी रचनाओं की समझ में वृद्धि होगी; साहित्यिक समृद्धि का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के उन्नयन एवं परीक्षाओं में कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : (विशेष :पाठ्यक्रम में संकलित किन्हीं आठ कवियों को ही एक सत्र में पढ़ाया जाएगा)

इकाई – I

1. सिद्ध साहित्य: हिन्दी काव्यधारा, राहुल सांकृत्यायन, सरहपा, 2, 4, 5, 6, 7
2. नाथ साहित्य: गोरखबानी, पीताम्बरदत्त बड़थवाल, पद 1 से 10
3. रासो साहित्य: पृथ्वीराज रासो, माताप्रसाद गुप्त, कयमास वध
4. विद्यापति पदावली: बेनीपुरी, पद- 1,2,4,9,12,14,15,18,28,34

इकाई – II

1. कबीरदास: कबीर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, आरंभ से 15 पद
2. जायसी: पद्मावत, वासुदेवशरण अग्रवाल, नागमती वियोग खंड
3. सूरदास, भ्रमरगीतसार, रामचंद्र शुक्ल, 1 से 15
4. तुलसीदास, रामचरितमानस, उत्तरकांड 101 से 130

इकाई – III

1. मीराबाई की पदावली, परशुराम चतुर्वेदी, पद- 26 से 35
2. केशवदास: रामचंद्रिका, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, सोलहवाँ प्रकाश
3. भूषण ग्रंथावली: विश्वनाथप्रसाद मिश्र, कवित्त 408 से 417
4. जगन्नाथदास रत्नाकर, उद्भव शतक, जगदीश गुप्त, 1, 2, 4, 6, 7

इकाई – IV

1. देव की दीपशिखा: पद 26 से 35
2. घनानंद कवित्त: पद 1 से 10
3. बिहारी रत्नाकर: 1 से 35
4. सेनापति, ऋतुवर्णन 1 से 5

संदर्भ ग्रंथ :-

1. विद्यापति पदावली: बेनीपुरी, लोकभारती, इलाहाबाद
2. कबीर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली
3. सूफीमत: साधना और साहित्य, रामपूजन तिवारी, ज्ञानमंडल, वाराणसी
4. जायसी, विजयदेवनारायण साही, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद

5. गोरखबानी, पीताम्बरदत्त बड़थवाल, आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली
6. नाथ सिद्धों की बानियाँ, हजारीप्रसाद द्विवेदी, नागरीप्रचारणी सभा, काशी
7. पीताम्बरदत्त बड़थवाल, हिंदी काव्य में निर्गुण संप्रदाय, अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ
8. सिद्धों की साधना, रमेशचंद्र पाण्डेय, लोक साधना केंद्र, वाराणसी
9. मध्ययुगीन हिंदी संत साहित्य और रवीन्द्रनाथ, रामेश्वर मिश्र, विश्वविद्यालय, वाराणसी
10. रीतिकाव्य की भूमिका, नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
11. केशव का आचार्यत्व, विजयपाल सिंह, राजपाल एंड संस, दिल्ली
12. बिहारी का नया मूल्यांकन, बच्चन सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
13. देव और उनकी कविता, नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
14. घनानंद, लल्लन राय, साहित्य अकादमी, दिल्ली
15. रीतिकाव्य संग्रह, जगदीश गुप्त, साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद
16. रीतिकाव्य, नंदकिशोर नवल, राजकमल, दिल्ली
17. गोस्वामी तुलसीदास, रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
18. सूरदास, ब्रजेश्वर वर्मा, लोकभारती, इलाहाबाद
19. रीतिकाव्य की इतिहासदृष्टि, सुधीन्द्र कुमार, वाणी, दिल्ली
20. भक्ति आन्दोलन और सूरदास काव्य, मैनेजर पाण्डेय, वाणी, दिल्ली
21. लोकवादी तुलसीदास, विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण, दिल्ली
22. रीतिकाल : सेक्सुअलिटी का समारोह, सुधीश पच्चौरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
23. सनेह को मारग, इमरै बंधा, वाणी, दिल्ली

सत्र : 1

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 3

पत्र कोड : HIN 403

भाषा विज्ञान, हिंदी भाषा एवं प्रयोजनमूलक हिंदी

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्यनोपरांत भाषा विज्ञान, हिंदी भाषा एवं प्रयोजनमूलक हिंदी संबंधी ज्ञान में समृद्धि होगी। प्राप्त ज्ञान का उपयोग वे भाषा सम्बन्धी नियमों एवं उनके व्यावहारिक उपयोग के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं में कर सकेंगे।

पाठ्यविषय :**इकाई - I**

1. भाषा और भाषा विज्ञान: परिभाषा, स्वरूप एवं व्याप्ति, भाषा और सम्प्रेषण, भाषा व्यवहार, भाषा-संरचना, भाषिक-प्रकार्य, अध्ययन की पद्धतियाँ एवं दिशाएँ, वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक
2. स्वन प्रक्रिया: स्वनिम की अवधारणा, स्वनों का वर्गीकरण, स्वन, स्वनिम और सहस्वन, स्वन परिवर्तन के कारण, स्वरूप और शाखाएँ, स्वनगुण, स्वनिम विज्ञान, वागवयव और उनके कार्य

इकाई - II

1. रूपविज्ञान एवं रूपिम विज्ञान: रूप, रूपिम एवं सहरूप, शब्द और पद, रूपप्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य
2. वाक्यविज्ञान: अवधारणा, वाक्य रचना के आधार, अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य विश्लेषण, निकटतम अवयव विश्लेषण, गहन-संरचना और बाह्य-संरचना।
3. अर्थविज्ञान – अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ प्रतीति के साधन, पर्यायता, अनेकार्थक, अर्थ परिवर्तन के प्रकार एवं दिशाएँ।

इकाई - III

1. हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ, वैदिक तथा संस्कृत और उनकी विशेषताएँ, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा, विशेषताएँ, आधुनिक आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण
2. हिन्दी का भौगोलिक विस्तार: हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ, पूर्वी एवं पश्चिमी हिन्दी में अंतर, खड़ी बोली, ब्रजभाषा और उसकी विशेषताएँ

इकाई - IV

1. हिन्दी के विविध रूप- संपर्क-भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संचार भाषा, हिन्दी की सांविधानिक स्थिति
2. हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ - आंकड़ा, संसाधन, मशीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा शिक्षण

सन्दर्भ ग्रंथ :-

1. सामान्य भाषाविज्ञान, बाबूराम सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग
2. भाषाविज्ञान की भूमिका, देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण, दिल्ली
3. भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
4. भाषा, ब्लूमफिल्ड, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
5. अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान: सिद्धांत और व्यवहार, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
6. भाषा और समाज, रामविलास शर्मा
7. भाषा विज्ञान रसायन, कैलाशनाथ पाण्डेय, गाजीपुर साहित्य संवाद, गाजीपुर
8. हिंदी भाषा की संरचना, भोलानाथ तिवारी, वाणी, दिल्ली
9. हिंदी भाषा, हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद
10. भारतीय आर्यभाषा और हिंदी, सुनीति कुमार चटर्जी, राजकमल, दिल्ली
11. हिन्दी भाषा का इतिहास, धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी, प्रयाग
12. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, उदय नारायण तिवारी, भारती भंडार, प्रयाग
13. प्रयोजनमूलक हिंदी, रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, विश्वविद्यालय, वाराणसी
14. हिंदी भाषा का इतिहास, धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग
15. भाषा का समाजशास्त्र, सुभाष शर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

सत्र : 1

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 4

पत्र कोड : HIN 404

नाटक एवं निबंध

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के उपरान्त छात्र हिन्दी के प्रमुख नाटकों एवं निबंधों के मर्म को समझ सकेंगे, हिन्दी के प्रमुख नाटकों एवं निबंधों में वर्णित विषय की विशेषताओं को चिह्नित कर सकेंगे। अध्ययन के उपरान्त प्राप्त जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के साथ विविध प्रतियोगी परीक्षाओं में कर सकेंगे।

पाठ्यविषय :**इकाई – I**

1. जयशंकर प्रसाद- चंद्रगुप्त
2. मोहन राकेश- आधे-अधूरे

इकाई – II

1. अंधा युग- धर्मवीर भारती
2. जिस लाहौर नई देख्या- असगर वज़ाहत

इकाई – III

1. रामचन्द्र शुक्ल- चिंतामणि, भाव या मनोविकार, करुणा, कविता क्या है, लोकमंगल की साधनावस्था, रसात्मकबोध के विविध रूप
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी- अशोक के फूल, बसंत आ गया है, भारतीय संस्कृति की देन, भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या, मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है

इकाई – IV

1. हरिशंकर परसाई - क्या अतिथि देवता नहीं रहा?, विदेशी धन के साथ और क्या आयेगा?, बेचारा भला आदमी, पगडंडियों का जमाना
2. कुबेरनाथ राय - हिंदी ललित निबंध, हिंदी निबंध की विकास यात्रा, कोपल-कोपल ऋतुपति पाती, जगत तपोवन सो कियो

सन्दर्भ ग्रंथ : -

1. हिन्दी नाटक - बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. हिन्दी नाटक उद्भव और विकास, दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली
3. प्रसाद के नाटक: स्वरूप और संरचना, गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
4. हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. रंग दर्शन, नेमिचंद्र जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
6. रामचंद्र शुक्ल, शिवनाथ, सरस्वती मंदिर, बनारस
7. रामचंद्र शुक्ल, मलयज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. मोहन राकेश और उनके नाटक, गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

9. गुरुजी की खेती-बारी, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल, दिल्ली
10. जगत तपोवन सो कियो, विवेकी राय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
11. आस्था और चिंतन, विवेकी राय, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
12. पगडंडियों का जमाना, हरिशंकर परसाई, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. ऐसा भी सोचा जाता है, हरिशंकर परसाई, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. रंगमंच के सिद्धांत, देवेन्द्रनाथ अंकुर, राजकमल, दिल्ली

सत्र : 1

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 5

पत्र कोड : HIN 405

भारतीय साहित्य का तुलनात्मक परिदृश्य

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र भारतीय साहित्य के महत्वपूर्ण रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं से परिचित होंगे, जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। साथ ही, इस जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : (विशेष : व्याख्या से सम्बंधित प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे)

इकाई – I

1. तुलनात्मक साहित्य, परिभाषा और स्वरूप,
2. भारतीय साहित्य, स्वरूप और विशेषताएँ,
3. तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका

इकाई – II

1. भारतीय ज्ञान परम्पराओं का परिचय और भारतीय साहित्य पर उनका प्रभाव
2. वेद, पुराण, रामायण और महाभारत का सामान्य परिचय
3. कालिदास के नाटकों का सामान्य परिचय

इकाई – III

1. बांग्ला साहित्य : गीतांजलि- रवीन्द्रनाथ टैगोर (हिंदी अनुदित आरंभिक 10 कविताएँ)
2. उड़िया साहित्य : श्री राधा- रमाकांत रथ (हिंदी अनुदित आरंभिक 10 कविताएँ)

इकाई – IV

1. मराठी साहित्य : आक्रोस का कोरस - नामदेव ढसाल (हिंदी अनुदित आरंभिक 10 कविताएँ)
2. तमिल साहित्य : सुब्रह्मण्य भारती (हिंदी अनुदित) कविता संख्या 11 से 20 तक
3. उर्दू साहित्य : नजीर अकबरावादी : प्रारंभिक दस कविताएँ

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. भारतीय साहित्य, नगेन्द्र, साहित्य, चिरगाँव, झाँसी
2. भारतीय साहित्य की भूमिका, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. भारतीय साहित्य, सियाराम तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर, वाराणसी
5. बांग्ला साहित्य का इतिहास, सुकुमार सेन
6. तमिल साहित्य, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
7. सुब्रह्मण्यम भारती : संकलित कविताएँ एवं गद्य
8. उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- एहतेशाम हुसैन, लोकभारती, इलाहबाद

9. रवीन्द्रनाथ की कविताएँ, साहित्य अकादमी, दिल्ली
10. रवीन्द्र कविता कानन, निराला, राजकमल, दिल्ली
11. रवीन्द्र साहित्य के हिंदी अनुवादों का अनुशीलन, शकुंतला मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

सत्र : 2

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 6

पत्र कोड : HIN 406

आधुनिक हिंदी कविता

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र हिंदी के महत्वपूर्ण आधुनिक कवियों एवं उनकी रचनाओं से परिचित होंगे, जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। प्राप्त ज्ञान का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : (विशेष :- पाठ्यक्रम में संकलित किन्हीं आठ कवियों को ही एक सत्र में पढ़ाया जाएगा)

इकाई – I

1. मैथिलीशरण गुप्त: साकेत, नवम सर्ग
2. हरिऔध: प्रियप्रवास, प्रथम सर्ग
3. जयशंकर प्रसाद: कामायनी, चिंता सर्ग
4. दिनकर: उर्वशी, तृतीय अंक

इकाई – II

1. निराला: राम की शक्तिपूजा
2. पंत: परिवर्तन, मौन निमंत्रण
3. महादेवी वर्मा: पंथ होने दो अपरिचित, सब बुझे दीपक जला लूं, यह मंदिर का दीप
4. नागार्जुन: गुलाबी चूड़ियाँ, हरिजन गाथा

इकाई – III

1. अज्ञेय : असाध्य वीणा
2. मुक्तिबोध : अँधेरे में
3. सर्वेश्वर : पिछड़ा आदमी, सौंदर्यबोध
4. धूमिल : पटकथा

इकाई – IV

1. श्रीकांत वर्मा : कोसल में विचारों की कमी है, तीसरा रास्ता, मगध
2. केदारनाथ सिंह : उत्तर कबीर
3. कुंवर नारायण : नचिकेता प्रसंग
4. विनोद कुमार शुक्ल : रायपुर बिलासपुर संभाग, कितना बहुत है

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

1. जयशंकर प्रसाद, नंददुलारे बाजपेई, भारतीय भंडार, इलाहाबाद
2. प्रसाद का काव्य, प्रेमशंकर, भारतीभंडार, इलाहाबाद
3. छायावाद, नामवर सिंह, राजकमल, दिल्ली
4. कामायनी एक पुनर्विचार, मुक्तिबोध, राजकमल, दिल्ली

5. निराला की साहित्य साधना, रामविलास शर्मा, राजकमल, दिल्ली
6. रामधारी सिंह दिनकर, विजेन्द्र नारायण सिंह, साहित्य अकादेमी
7. दिनकर के काव्य में इतिहास एवं राजनीति, सुभाष चन्द्र राय, गौरव प्रकाशन, दिल्ली
8. मैथिलीशरण गुप्त, नंदकिशोर नवल, राजकमल, दिल्ली
9. महादेवी, शचीरानी गुर्तू
10. सुमित्रानंदन पंत, डॉ. नगेन्द्र
11. जड़ो का संगीत: केदारनाथ सिंह की कविता, मुक्तेश्वर नाथ तिवारी, सेतु प्रकाशन, नोएडा

सत्र : 2

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 7

पत्र कोड : HIN 501

हिंदी कथा साहित्य

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र हिंदी के महत्वपूर्ण कथाकारों एवं उनकी रचनाओं को जान सकेंगे, जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। साथ ही, इस जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : (विशेष : व्याख्या उपन्यास से ही पूछी जाएगी)

इकाई – I

1. सामाजिक उपन्यास का सामान्य परिचय
2. प्रेमचंद: गोदान

इकाई – II

1. ऐतिहासिक उपन्यास का सामान्य परिचय
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी: बाणभट्ट की आत्मकथा

इकाई – III

1. मनोविज्ञानिक उपन्यास का सामान्य परिचय
2. अज्ञेय: शेखर : एक जीवनी

इकाई – IV

1. आंचलिक उपन्यास का सामान्य परिचय
2. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल

इकाई – V

कहानी : राजेन्द्र बाला घोष - दुलाईवाली, प्रेमचंद - कफ़न, जैनेन्द्र- खेल, यशपाल- परदा, निर्मल वर्मा- कव्वे और काला पानी, कमलेश्वर- राजा निरबंसिया, मन्नू भंडारी- यही सच है, कृष्णा सोबती- सिक्का बदल गया, फणीश्वरनाथ रेणु- ठेस, काशीनाथ सिंह- सदी का सबसे बड़ा आदमी, ज्ञानरंजन- पिता, संजीव- अपराध, उदय प्रकाश- पॉल गोमरा का स्कूटर, अखिलेश- चिट्ठी, शिवमूर्ति- सिरी उपमा जोग

संदर्भ ग्रंथ : -

1. हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल, दिल्ली
2. कहानी: नई कहानी, नामवर सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
3. हिंदी उपन्यास का विकास, मधुरेश, लोकभारती, इलाहाबाद
4. हिंदी कहानी का विकास, मधुरेश, लोकभारती, इलाहाबाद
5. कथाकार अज्ञेय, चंद्रकांत बांदिबडेकर,
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी, चौथीराम यादव,
7. रेणु की जीवनी, भारत यायावर, सेतु, नोएडा
8. रेणु की तलाश, भारत यायावर, सेतु, नोएडा

9. प्रेमचंद: जीवन, कला और कृतित्व, हंसराज रहबर, आत्माराम एंड संस, दिल्ली
10. प्रेमचंद और उनका युग, रामविलास शर्मा, राजकमल, दिल्ली
11. हिंदी उपन्यास: एक विस्तृत अध्ययन, जगदीश भगत, आनंद प्रकाशन, कलकत्ता
12. प्रेमचंद और भारतीय समाज, आशीष त्रिपाठी, राजकमल, दिल्ली

सत्र : 2

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 8

पत्र कोड : HIN 502

काव्यशास्त्र

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के उपरान्त छात्र भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं की सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक समझ विकसित करेंगे। जिससे उनकी साहित्यिक समझ एवं समीक्षा क्षमता में वृद्धि होगी।

पाठ्यविषय :

इकाई – I

1. रस सिद्धांत, रस का स्वरूप, रस- निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा
2. अलंकार-सिद्धांत, मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण

इकाई – II

1. रीतिसिद्धांत- रीति की अवधारणा, काव्यगुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ
2. वक्रोक्ति सिद्धांत - वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद
3. ध्वनिसिद्धांत, स्वरूप, ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य

इकाई – III

1. अरस्तू – अनुकरण सिद्धांत, त्रासदी, विरेचन
2. लोंजाइनस – उदात्त की अवधारणा
3. ड्राइडेन के काव्यसिद्धांत

इकाई – IV

1. कॉलरिज : कल्पना सिद्धांत और ललित कल्पना
2. टी. एस. इलियट- परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत
3. आइ. ए. रिचर्ड्स: मूल्य, सम्प्रेषण, काव्यभाषा, व्यावहारिक आलोचना

संदर्भ ग्रन्थ :-

1. भारतीय साहित्यशास्त्र - बलदेव उपाध्याय
2. भारतीय साहित्यशास्त्र, गणेश त्र्यम्बक देशपाण्डेय, पापुलर बुक डिपो, मुंबई
3. संस्कृत आलोचना - बलदेव उपाध्याय
4. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज – राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल, दिल्ली
6. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास – पी. वी. काणे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
7. पाश्चात्य समीक्षा दर्शन, जगदीशचंद्र जैन, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
8. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, देवेन्द्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

9. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, तारकनाथ बाली
10. पाश्चात्य साहित्य, निर्मला जैन, राधाकृष्ण, दिल्ली
11. आलोचक और आलोचना, बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
12. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन, इन्द्र नाथ चौधुरी, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली

सत्र : 2

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 9

पत्र कोड : HIN 503

हिंदी आलोचना एवं सैद्धांतिक मत

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: छात्र साहित्यिक आलोचना की प्रवृत्तियों, परंपराओं और सिद्धांतों की गहन समझ विकसित करेंगे। वे भारतीय एवं पाश्चात्य आलोचना के प्रमुख विचारकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन कर साहित्यिक पाठों का विवेचन करने में सक्षम होंगे। यह अध्ययन उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता को परिपक्व बनाएगा और शोध, लेखन तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में उन्हें समर्थ बनाएगा।

पाठ्यविषय :**इकाई – I**

1. हिंदी आलोचना के इतिहास का संक्षिप्त परिचय
2. शुक्लयुगीन आलोचना : महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

इकाई – II

1. छायावादी कवियों की आलोचना : प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी
2. शुक्लोत्तर आलोचना: हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी, नलिन विलोचन शर्मा, नगेंद्र, देवीशंकर अवस्थी, विजयदेव नारायण साही, रामस्वरूप चतुर्वेदी

इकाई – III

1. प्रगतिवादी आलोचना : शिवदान सिंह चौहान, मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, मैनेजर पाण्डेय
2. विमर्श केन्द्रित आलोचना : दलित विमर्श, स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श

इकाई – IV

1. सिद्धांत और वाद;
2. आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद,
3. अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद,
4. मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद

इकाई – V

1. आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ –
2. संरचनावाद, शैलीविज्ञान,
3. विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. हिन्दी आलोचक : शिखरों का साक्षात्कार, रामचंद्र तिवारी, लोकभारती, इलाहाबाद
2. हिन्दी आलोचना, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल, दिल्ली
3. हिन्दी आलोचना का विकास, नन्दकिशोर नवल, राजकमल, दिल्ली
4. समकालीन हिन्दी आलोचना, परमानन्द श्रीवास्तव, साहित्य अकादमी, दिल्ली
5. आलोचक और आलोचना, बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
6. रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, रामविलास शर्मा, राजकमल, दिल्ली
7. दूसरी परंपरा की खोज, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. दलित साहित्य की अवधारणा, कैवल भारती, बोधिसत्व प्रकाशन, रामपुर
9. दलित साहित्य : एक मूल्यांकन, चमनलाल, राजपाल एंड संस, दिल्ली
10. विचार और आलोचना : राहुल सिंह, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली
11. आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द, बच्चन सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
12. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. साहित्य की इतिहासदृष्टि, मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, ओमप्रकाश वाल्मीकि, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
15. आलोचना की अवधारणायें, रेनवेलक. हरियाणा हिंदी ग्रंथ अकादमी, पंचकुला
16. वाचिकता, वंदना टेटे, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
17. नारीवादी निगाह से, निवेदिता मेनन, राजकमल, दिल्ली
18. नारीवादी आलोचना, किंगसन सिंह पटेल, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली

सत्र : 2

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 10

पत्र कोड : HIN 504

हिंदी का कथेतर गद्य

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: छात्र हिंदी साहित्य से सम्बंधित कथेतर गद्य विधाओं के इतिहास का विश्लेषण कर सकेंगे एवं विभिन्न लेखकों और उनकी कृतियों से परिचित हो सकेंगे

पाठ्यविषय :**इकाई – I**

1. आत्मकथा : ओम प्रकाश वाल्मीकि : जूठन-2
2. जीवनी : विष्णु प्रभाकर : आवारा मसीहा

इकाई – II

1. रेखाचित्र : महादेवी वर्मा : स्मृति की रेखाएँ (प्रारंभिक पाँच)
2. संस्मरण : जगदीशचंद्र माथुर : जिन्होंने जीना जाना

इकाई – III

1. यात्रावृत्तांत : अज्ञेय : अरे यायावर रहेगा याद
2. रिपोर्टाज : फणीश्वरनाथ रेणु- मानुष बने रहो, कलाकारों की रिलीफ पार्टी, भूमिदर्शन की भूमिका
1 और 2

इकाई – IV

1. पत्र साहित्य : दिनकर के पत्र

इकाई – V

1. डायरी : मुक्तिबोध : एक साहित्यिक की डायरी

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

1. आधुनिक गद्य की विविध विधाएं, उदयभानु सिंह, वाणी, दिल्ली
2. हिंदी रिपोर्टाज, वीरपाल वर्मा, कुसुम प्रकाशन, मुजफ्फरनगर
3. हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. महादेवी का गद्य साहित्य, मुक्तेश्वर नाथ तिवारी, अमन प्रकाशन, कानपूर
5. दिनकर के पत्र, कन्हैयालाल फुलफगर, वाणी, दिल्ली
6. हिंदी गद्य : विन्यास और विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, राजकमल, दिल्ली
7. साहित्यिक विधाएं : सैद्धांतिक पक्ष, मधु धवन, राजकमल, दिल्ली
8. फणीश्वरनाथ रेणु, मन्मथनाथ गुप्त, राजकमल, दिल्ली

सत्र : 3

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 11

पत्र कोड : HIN 505

अनुसंधान तकनीक (रिसर्च मेथालोजी एंड टेकनीक)

इस पत्र के अध्ययन के उपरान्त छात्र शोध का अर्थ एवं उसकी विशिष्टताएं समझ सकेंगे। वे यह भी समझ सकेंगे कि शोध के दौरान किन महत्वपूर्ण पड़ावों से होकर गुजरना पड़ता है एवं शोध कि बारीकियाँ क्या-क्या हैं।

पाठ्यक्रम :**इकाई – I**

1. शोध का आशय, परिभाषा,
2. शोधार्थी की अर्हताएँ

इकाई – II

1. अनुसंधान की प्रक्रिया की बुनियादी विशिष्टताएं
2. शोध सर्वेक्षण, विभिन्न प्रकार के शोध विषय अथवा समस्या चयन

इकाई – III

1. परिकल्पना, प्रकार, सामग्री संकलन, साक्षात्कार एवं प्रश्नावली
2. क्षेत्रीय अध्ययन, पुस्तकालय उपयोग विधि

इकाई – IV

1. अनुसंधान डिजाइन
2. अनुसंधान के औजार

इकाई – V

1. शोध आलेख एवं प्रबंध लेखन
2. उद्धरण, पाद टिप्पणी, अनुक्रमणिका

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. रिसर्च मैथेडोलॉजी, लक्ष्मीनारायण कोली, वाई. के पब्लिशर्स, आगरा
2. रिसर्च मैथेडोलॉजी, सी. आर. कोठारी
3. शोध प्राविधि, विनय मोहन शर्मा
4. शोध स्वरूप एवं मानक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल
5. अनुसन्धान के मूल तत्व, सं. विश्वनाथ प्रसाद
6. अनुसन्धान, डॉ. सत्येन्द्र
7. हिंदी के स्वीकृत शोध-प्रबंध, उदयभानु सिंह

सत्र : 3

क्रेडिट : 4

समय : 3

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 12

पत्र कोड : HIN 506

शोध प्रस्ताव लेखन

शोध प्रस्ताव लेखन के महत्व को रूपायित करते हुए छात्रों में शोध प्रस्ताव की विधि सिखलाना इस पत्र का उद्देश्य है

पाठ्यक्रम :**इकाई – I**

1. शोध प्रस्ताव का परिचय, सिनॉप्सिस का अर्थ एवं परिभाषा, सिनॉप्सिस का महत्व
2. शोध प्रस्ताव के उद्देश्य: शोध विषय की स्पष्टता प्रदान करना, शोध की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता बताना

इकाई – II

1. अनुसंधान की संभावनाओं को प्रस्तुत करना
2. शोध विषय का चयन, विषय चयन के आधार

इकाई – III

1. शीर्षक निर्माण
2. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

इकाई – IV

1. शोध की प्रासंगिकता एवं महत्व
2. अध्याय विभाजन

इकाई – V

1. संदर्भ एवं ग्रंथ सूची, MLA, APA आदि शैली का परिचय
2. सिनॉप्सिस लेखन की भाषा एवं शैली
3. मॉडल सिनॉप्सिस तैयार करना

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. रिसर्च मैथेडोलॉजी, लक्ष्मीनारायण कोली, वाई. के. पुब्लिशर्स, आगरा
2. रिसर्च मैथेडोलॉजी, सी. आर. कोठारी
3. शोध प्राविधि, विनय मोहन शर्मा
4. शोध स्वरूप एवं मानक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल
5. अनुसन्धान के मूल तत्व, सं. विश्वनाथ प्रसाद
6. अनुसन्धान, डॉ. सत्येन्द्र
7. हिंदी के स्वीकृत शोध-प्रबंध, उदयभानु सिंह

सत्र : 3

समय :

पत्र संख्या : 13

क्रेडिट : 4

पूर्णांक : 100

पत्र कोड : HIN 507

13 प्रबंध लेखन (रिपोर्ट राईटिंग)

शोध प्रबंध लेखन के कौशल एवं तत्संबंधी प्रवीणता को बढ़ाना इस पत्र का उद्देश्य है

पाठ्यक्रम :**इकाई – I**

1. प्रबंध (रिपोर्ट) का अर्थ, रिपोर्ट लेखन का उद्देश्य, विषय चयन
2. प्रबंध (रिपोर्ट) लेखन की प्रक्रिया

इकाई – II

1. जानकारी एवं आँकड़ों का संकलन
2. रूपरेखा निर्माण

इकाई – III

1. सरल, स्पष्ट एवं प्रभावपूर्ण भाषा
2. वस्तुनिष्ठता और तटस्थता

इकाई – IV

1. संक्षिप्तता एवं क्रमबद्धता
2. प्रारूप लेखन

इकाई – V

1. संपादन एवं संशोधन
2. संदर्भ एवं उद्धरण पद्धति

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. रिसर्च मैथेडोलॉजी, लक्ष्मीनारायण कोली, वाई. के पुब्लिशर्स, आगरा
2. रिसर्च मैथेडोलॉजी, सी. आर. कोठारी
3. शोध प्राविधि, विनय मोहन शर्मा
4. शोध स्वरूप एवं मानक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल
5. अनुसन्धान के मूल तत्व, सं. विश्वनाथ प्रसाद
6. अनुसन्धान, डॉ. सत्येन्द्र
7. हिंदी के स्वीकृत शोध-प्रबंध, उदयभानु सिंह

सत्र : 3

क्रेडिट : 4

समय :

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 14

पत्र कोड : HIN 508

पुस्तक समीक्षा (बुक रिव्यू)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को पुस्तक समीक्षा की कला, पद्धति, भाषा, आलोचनात्मक दृष्टि तथा लेखन कौशल से परिचित कराना है, ताकि वे किसी भी पुस्तक का वस्तुनिष्ठ, विश्लेषणात्मक और प्रभावशाली मूल्यांकन कर सकें।

पाठ्यक्रम :**इकाई – I**

1. पुस्तक समीक्षा की अवधारणा, पुस्तक समीक्षा का अर्थ एवं स्वरूप, समीक्षा, आलोचना और सारांश में अंतर
2. पुस्तक समीक्षा के उद्देश्य

इकाई – II

1. पुस्तक समीक्षा के प्रकार : परिचयात्मक, आलोचनात्मक, अकादमिक, तुलनात्मक, शोधपरक
2. पुस्तक समीक्षा की प्रक्रिया

इकाई – III

1. पुस्तक चयन की विधि : विषयानुकूल पुस्तक का चयन
2. पुस्तक अध्ययन की तकनीक

इकाई – IV

1. समीक्षा लेखन की तैयारी
2. पुस्तक समीक्षा की संरचना

इकाई – V

1. मुख्य भाग : विषयवस्तु, पात्र, भाषा एवं शैली का विश्लेषण, विचारधारा एवं सामाजिक संदर्भ
2. अकादमिक एवं डिजिटल पुस्तक समीक्षा और हिंदी पुस्तक समीक्षा का इतिहास

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. रिसर्च मैथेडोलॉजी, लक्ष्मीनारायण कोली, वाई. के पुब्लिशर्स, आगरा
2. रिसर्च मैथेडोलॉजी, सी. आर. कोठारी
3. शोध प्राविधि, विनय मोहन शर्मा
4. शोध स्वरूप एवं मानक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल
5. अनुसन्धान के मूल तत्व, सं. विश्वनाथ प्रसाद
6. अनुसन्धान, डॉ. सत्येन्द्र
7. हिंदी के स्वीकृत शोध-प्रबंध, उदयभानु सिंह
8. आधुनिक हिंदी साहित्य में समालोचना का विकास : वेंकट शर्मा, आत्माराम एंड संस, दिल्ली

सत्र : 3

क्रेडिट : 4

समय :

पूर्णांक : 100

पत्र संख्या : 15

पत्र कोड : HIN 509

शोध नैतिकता (पब्लिकेशन इथिक्स) एंड हिंदी कंप्यूटिंग

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रकाशन नैतिकता (Publication Ethics) तथा हिंदी कंप्यूटिंग के सिद्धांत, व्यवहार, तकनीक और समकालीन चुनौतियों से परिचित कराना है। इसके माध्यम से शोध, लेखन, संपादन, डिजिटल प्रकाशन तथा हिंदी भाषा के तकनीकी उपयोग की समझ विकसित की जाएगी।

पाठ्यक्रम :

इकाई – I

शोध नैतिकता की संकल्पना, प्रकाशन नैतिकता का अर्थ एवं स्वरूप

इकाई – II

शोध नैतिकता, शोधकर्ता की जिम्मेदारियाँ, डेटा संग्रह एवं प्रस्तुति की नैतिकता, निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता, कॉपीराइट एवं बौद्धिक संपदा अधिकार

इकाई – III

साहित्यिक चोरी (Plagiarism) साहित्यिक चोरी का अर्थ, प्रकार, प्रत्यक्ष साहित्यिक चोरी, डेटा चोरी,

इकाई – IV

साहित्यिक चोरी के दुष्परिणाम, प्लेज़रिज़्म जाँच सॉफ्टवेयर का परिचय

इकाई – V

हिंदी कंप्यूटिंग की संकल्पना, हिंदी कंप्यूटिंग का इतिहास, यूनिकोड एवं फॉन्ट, यूनिकोड का परिचय, हिंदी फॉन्ट, कुर्तिदेव, मंगलदेव

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. रिसर्च मैथेडोलॉजी, लक्ष्मीनारायण कोली, वाई. के. पुब्लिशर्स, आगरा
2. रिसर्च मैथेडोलॉजी, सी. आर. कोठारी
3. शोध प्राविधि, विनय मोहन शर्मा
4. शोध स्वरूप एवं मानक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल
5. अनुसन्धान के मूल तत्व, सं. विश्वनाथ प्रसाद
6. अनुसन्धान, डॉ. सत्येन्द्र
7. हिंदी के स्वीकृत शोध-प्रबंध, उदयभानु सिंह

सत्र : 4**क्रेडिट : 20****समय :****पूर्णांक : 500****पत्र संख्या : 16-20****पत्र कोड : HINRES 510****अनुसंधान**

पत्र संख्या 16 से 20 तक अर्थात् अंतिम सेमेस्टर में विद्यार्थियों के लिए एक लघु शोध-प्रबंध (Minor Dissertation) प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। इस शोध-प्रबंध का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में हिंदी साहित्य संबंधी क्षेत्र में अनुसंधानपरक दृष्टि का विकास करना तथा उन्हें भविष्य में शोध आलेख लेखन, शोध-प्रबंध लेखन, अकादमिक अध्ययन एवं उच्च स्तरीय अनुसंधान कार्य हेतु प्रवीण, सक्षम एवं वैज्ञानिक दृष्टि-संपन्न बनाना है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में विषय के प्रति गंभीर चिंतन, आलोचनात्मक विवेक, संदर्भ-संग्रह, तथ्य-विक्षेपण, अनुसंधान-पद्धति तथा अकादमिक लेखन की दक्षता विकसित की जाएगी।

शोध-विषय का चयन विद्यार्थियों की रुचि, बौद्धिक क्षमता, विषयगत अभिरुचि एवं शोध-संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए संबंधित निर्दिष्ट शिक्षक के मार्गदर्शन में होगा। विषय चयन की प्रक्रिया में यह सुनिश्चित किया जाएगा कि शोध-विषय प्रासंगिक, मौलिक एवं उच्च अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी हो। शोध-निर्देशक शिक्षक विद्यार्थियों को शोध की रूपरेखा निर्माण, संदर्भ सामग्री के चयन, शोध-पद्धति, अध्याय विभाजन, उद्धरण शैली तथा अकादमिक लेखन के विभिन्न आयामों से परिचित कराएंगे।

शोध-कार्य की प्रगति एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रत्येक सप्ताह में चार कार्यदिवस निर्धारित रहेंगे, जिनमें शिक्षक विद्यार्थियों की शोध-दिशा, विषय-वस्तु, लेखन-प्रक्रिया तथा कार्य-प्रगति की नियमित समीक्षा करेंगे। आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों को शोध-संबंधी समस्याओं के समाधान, सामग्री-संग्रह, विक्षेपण एवं प्रस्तुतीकरण के संबंध में समुचित मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

यह लघु शोध-प्रबंध विद्यार्थियों में स्वतंत्र अध्ययन, तार्किक विक्षेपण, अकादमिक अनुशासन एवं शोध-संस्कृति के विकास में सहायक सिद्ध होगा तथा उन्हें भविष्य में पी-एच.डी. एवं अन्य उच्चस्तरीय शोध कार्यों के लिए सुदृढ़ आधार प्रदान करेगा।